हिन्दी भाषा का विकास

भाषा के स्वरूप और विकास के बारे में प्रामाणिक आधारों पर कहना मुश्किल हिन्दी को संस्कृत भाषा की वंशजा माना जाता है। 1500 ई. पूर्व तक भारत में वैदिक भाषा का प्रयोग होता था। कालान्तर में परिवर्तित होने के कारण इसका वर्तमान समय में दल रहा रूप सामने आया। 500 ई. पूर्व तक इसी का विशेष प्रभाव रहा। पाणिनि व्याकरण के कठोर नियमों से जकड़ी होने के कारण ही संस्कृत बोलचाल की भाषा न रह सकी और एक नई भाषा प्राकृत का जन्म हुआ।

साहित्यिक दृष्टि से इसके चार रूप थे - पैशाची, शौरसेनी मागधी और महाराष्ट्री। इन भाषाओं में भी परिवर्तन हुए और अनेक भाषाएँ सामने आई। इन्हें अपभ्रंश कहा गया। परिवर्तन के फलस्वरूप इससे भी अनेक भाषाओं को जन्म मिला। परंतु हिन्दी अपभ्रंश की अवस्था से प्राचीन हिन्दी अवस्था को कब पहुँची, इसके बारे में भी भिन्न-भिन्न मत पाए जाते हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से अधिकतर विद्वान हिन्दी का प्रारंभ ईसा की दसवी शताब्दी से मानते है। हिन्दी संस्कृत से प्राकृत एवं अपभ्रंश का रूप पार करती हुई आज की हिन्दी के रूप में आई है। इसलिए संस्कृत, प्राकृत अथवा अपने की रचनाओं में उसके पूर्व रूप के दर्शन होने स्वाभाविक ही है। हिन्दी के शिशु रूप के दर्शन वीरोकाल के काव्य में दिखाई देते हैं। चन्दबरदाई के पृथ्वीराज रासो को हिन्दी का पहला महाकोष्य माना जाता है। तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने इसी बोलचाल की भाषा में साहित्य रचना करके इसे साहित्यिक रूप प्रदान किया। उनकी रचनाओं में वर्तमान की खड़ी बोली के दर्शन होते हैं। उदाहरण के लिए

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।

चारों ओर वह थाल फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।

इस उदाहरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि हिन्दी की खड़ी बोली का जन्म उर्दू भाषा के जन्म से भी पहले हो गया था।

भाषा परिवार :भारोपीय परिवार और हिन्दी

भाषा वैज्ञानिकों का विचार है कि विश्व में लगभग 3000 भाषाएँ बोली जाती है। इन भाषाओं में परस्पर समानता तथा असमानता स्पष्ट होती है। इसी आधार पर बारह भाषा परिवार माने गए हैं। जिन भाषाओं का जन्म किसी एक मूल भाषा से हुआ है उन सबको एक ही परिवार में रखा गया है। भारत में प्रचलित भाषाओं को निम्न दो भाषा परिवारों में रखा गया है :-

1. भारत-यूरोपीय (भारोपीय परिवार): यह परिवार भाषा परिवारों में प्रमुख स्थान रखता है। इस परिवार के नाम के अनुसार इसमें भारत और यूरोप में बोली जाने वाली भाषाएँ आती हैं। संस्कृत यूनानी, जर्मन, रूसी, फ्रांसीसी, अंग्रेजी, फारसी, ईरानी आदि भाषाएँ इस परिवार के अंतर्गत आती है। भारत यूरोपीय भाषा आर्य जाति की प्राचीन भाषा थी। यह भाषा उस समय प्रचलित थी जब आर्य जाति एक ही स्थान पर निवास करती थी। वह मूल निवास स्थान भारत था, या मध्य एशिया अथवा यूरोप था।

2. द्रविड भाषा परिवार: इस भाषा परिवार में दक्षिण भारत में बोली जाने वाली तमिल, तेलगू, मलयालम और कन्नड़ आदि भाषाएँ आती हैं।

भारोपीय परिवार से सम्बन्धित और भारत में प्रचलित अन्य भाषाएँ है बांग्ला, असमिया, उर्दू, गुजराती,मराठी, उड़िया, हिन्दी, पंजाबी सिन्धी, कश्मीरी इत्यादि हिन्दी भाषा भारत की राष्ट्र भाषा है, किंतु राजभाषा के रूप में हिन्दी को मान्यता है। भारतीय संविधान में 22 भाषाओं को मान्यता दी गई है। ये भाषाएँ है:

हिन्दी	पंजाबी
असमी	कश्मीरी
सिन्धी	अंग्रेजी
मैथिली	गुजराती
मराठी	कोकणी
मलयालम	तमिल
मिजो	मनीपुरी

नेपाली संस्कृत

तेलगु बंगाली

हिन्दी भाषा का उद्भव और विस्तार

प्रयाल के अनुसार हिन्दी आधुनिक भारतीय आर्य भाषा में आती है। शौरसेनी अपभ्रंश से हिन्दी राजस्थानी गुजराती, पंजाबी और पहाड़ी भाषाओं का सम्बन्ध है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हिन्दी भाषा का जन्म शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। हिन्दी साहित्य का आरंभ ग्यारहवी शताब्दी के खुमान रासो बीसलदेव रासो इत्यादि में देखने को मिलता है। हिन्दी भाषा के रूपों में भी अनेक परिवर्तन हुए तथा उसके कई भेद-उपभेद बने।

1. पूर्वी हिन्दी-

2. पश्चिमी हिन्दी _दांग की और बुन्देली बोलियाँ

भारत में हिन्दी भाषा प्रदेश है उत्तर प्रदेश हिमाचल प्रदेश, हरियाणा राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, दिल्ली झारखंड उत्तरांचल आदि।

भारत की लगभग 52 प्रतिशत जनता हिन्दी भाषी है। सम्पर्क भाषा के रूप में तो हिन्दी अपने विभिन्न रूपों में सारे देश में प्रयोग होती है। भारत के अतिरिक्त हिन्दी मारीशस, गुआना, सूरीनाम, फिजी, वेस्टइंडिज, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी बोली व समझी जाती है। विदेशों में बसे भारतीय मूल के लोग नेपाल, मलेशिया, श्रीलंका, अमेरीका, सिंगापुर, थाइलैंड आदि देशों में हिन्दी बोलते है।

निज भाषा उन्नति अहे: सब उन्नति को मूल

(भारतेन्दु हरिश्चन्द्र)

हिन्दी भाषा की उपभाषाएँ और बोलियाँ निम्न रूप में स्पष्ट की जा सकती है:

हिन्दी भाषा की शाखाएं

1.राजस्थानी

I) पूर्वी राजस्थानी (जयपुरी)

IIपश्चिमी राजस्थानी

III) दक्षिणी राजस्थानी(मालवी)

2.पूर्वी हिन्दी

I) अवधी

II) छत्तीसगढ़ी

III) बघेली

3. पश्चिमी हिन्दी

I) खड़ी बोली

II) ब्रज भाषा

III) बांगरू (हरियाणवी)

4.पहाड़ी

I) पश्चिमी पहाड़ी (हिमाचली)

II) मध्यवर्ती पहाड़ी (गढ़वाली, कुमाउँनी)

I)मैथिली

II)मगही

III)भोजपुरी

S.D.
S.D. COLLEGE OF EDUCATION, BNL.
KNOWLEDGE IS VISION SUPREME
ज्ञानं चक्षुर्मनुष्याणाम

इन उपभाषाओं और बोलियों ने भाषा के रूप में विकसित हो साहित्यिक रूप ले लिया और समृद्ध हो गई ब्रजभाषा भोजपुरी, अवधी, मैथिली ऐसी ही भाषाएँ हैं। राजस्थान में चन्दबरदाई ने जैसे हिन्दी को प्रतिष्ठित किया, मैथिली में विद्यापति, ब्रजभाषा में सूरदास, अवधी में तुलसीदास प्रसिद्ध कवि हुए हैं। जिन्होंने बोली को भाषा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

हिन्दी भाषा के विकास के विषय में जानने के पश्चात इसके नामकरण के विषय में जानने की जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक है। हमारे देश का आदि नाम सिन्धु था, फिर भरत के नाम पर इसे भारत कहने लगे। आज इसे भारतवर्ष, हिंदुस्तान आदि नामों से पुकारा जाता है। हिन्दी, सिंधु का ईरानी रूप है। फारसी में स का उच्चारण ह में होता है, इसलिए सिन्ध, हिन्द; बन गया और हिन्दी शब्द की उत्पत्ति भी इसी प्रकार हुई। परंतु अब कई ऐसे उदाहरण मिलने लगे हैं जिनसे पता चलता है कि हिन्दी शब्द का प्रयोग प्राचीन काल से होता आ रहा था। हिन्दी और हिंदुस्तान ये शब्द भारत में फारसी के आगमन से पहले ही विद्यमान थे।

भाषा रूप में हिन्दी शब्द का प्रयोग संभवतः अमीर खुसरो द्वारा किया गया है। अमीर खुसरो की खड़ी बोली को हिन्दी और उर्दू का जनक कहा जा सकता है। उन्होंने इस भाषा का नामकरण किया था हिन्दवी हिन्द का सटीक रूप है। अमीर खुसरो का यह आशय रहा होगा कि हिन्द की

लोकप्रिय भाषा का नाम हिन्दवी होना चाहिए। यही बाद में हिन्दुई और फिर हिन्दी हो गई और खड़ी बोली अपने आधुनिक विकसित रूप में हिन्दी के नाम से पूरे विश्व में प्रसिद्ध है।

KNOWLEDGE
VISION SUPREME
ज्ञानं चक्षुर्मनुष्याणाम